महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ० अजिता कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसरए समाजशास्त्र विभाग
डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय,
राँची, झारखण्ड
Email: ajitasrivastava14@gmail.com

सारांश

राष्ट्रपिता, बापू या मोहनदास करमचंद गाँधी भारत ही नहीं विश्व के चुनिंदें महान व्यक्ति के श्रेणी में आतें हैं। अहिंसा के मार्ग पर चलकर भारत को आजाद कराने वाले इस महात्मा ने इतिहास की दिशा बदल दी और नए इतिहास का सृजन किया। सत्य, शांति, अहिंसा, ईमानदारी के प्रति अडिग रहने के कारण अपनी क्षीण काया व सादगी के बावजूद पूरी दुनिया के लिए एक 'रोल मॉडल' बन गए। जहाँ उनके व्यक्तित्व में सरलता थी, वहीं वे उच्च कोटि के जटिल व कुटील राजनीतिज्ञ व सामाजिक विचारक थे। गाँधीजी का चिंतन सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि यथार्थ के धरातल पर आधारित था। उनके लिए सिद्धांत और व्यवहार में कोई विरोधाभास नहीं था और ना ही वह सार्वजनिक व व्यक्तिगत जीवन में कोई विभेद करते थे। सत्य को अपनाकर उन्होनें शोषित व वंचितों के बंद जुबान के पीछे के दर्द को समझा, इसलिए वे जन–जन के हमदर्द बन गए। उन्होंने भारत की प्राचीन परंपरा, संस्कृति तथा मूल्यों को व्यवहारिक रुप प्रदान किया। गाँधीजी ने जिन मूल्यों व विचारों का प्रतिपादन किया, वे शाश्वत हैं। प्रस्तुत शोध उद्देश्य महात्मा गाँधी के प्रासंगिक विचारो का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णात्मक प्रकृति का है। शोध कार्य के लिए द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यो और जानकारियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दः *महात्मा गाँधी।*

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 06.09.2020
Approved: 26.09.2020

डॉ० अजिता कुमारी

महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता

RJPP 2020,
Vol. XVIII, No. II,
pp.143-149
Article No. 016

Online available at *:*
https://anubooks.com/?page_id=6391

डॉ० अजिता कुमारी

प्रस्तावना

सत्य के प्रति तन–मन से समर्पित, विश्व मानवतावाद के संपोषक और संवर्द्धक गाँधीजी ने अपना जीवन लोकोपकार के लिए न केवल समर्पित किया, वरन् आजन्म वे इसी साधना में निरत रहे। इसलिए उनका सहज व्यक्तित्व और उनकी वैश्विक चिंतन भारत की ही नहीं, अपितु विश्व की अनुपम विरासत है। गाँधी जी के विचार और उनका दर्शन शाश्वत शिलालेख हैं। उनके विचार सूत्र अनेक पत्र–पत्रिकाओं, परिचर्चाओं, व्याख्यानों के माध्यम से व्यक्त होते रहें हैं। गाँधीजी ने 30 अप्रैल, 1933 को अपने पत्र हरिजन बंधु में लिखा था 'गाँधीवाद जैसी कोई वस्तु नहीं है, और मैं अपने पीछे कोई पंथ छोड़कर नहीं जाना चाहता। मैं किसी नए सिद्धांत या मत के प्रतिपादन का दावा नहीं करता। मैंने तो केवल अपने एंगल से हमारे दैनिक जीवन और समस्याओं पर शाश्वत सत्य के व्यवहार का प्रयास किया है। जो मत मैंने बनाए हैं और जो निष्कर्ष मैंने निकालें हैं, वे किसी भी प्रकार अंतिम सत्य नहीं हैं। अगर मुझे कल कोई बेहतर मत या निष्कर्ष मिल जाए तो मैं उनको बदल भी सकता हूं। दुनिया को सिखाने के लिए मेरे पास कुछ भी नया नहीं है। सत्य और अहिंसा उतने ही प्राचीन हैं जितनी पहाड़ियां हैं। मैंने तो केवल यही प्रयास किया है कि जितने बड़े पैमाने पर और जितने अच्छे ढंग से संभव हो, दोनों के प्रयोग करुं। ऐसा करते हुए मैंने कभी–कभी गलतियां की हैं और अपनी गलतियों से सीखा है।'गाँधीजी के विचारों की प्रासंगिकता पर तुषार गाँधी कहतें हैं कि 'आज महात्मा गाँधी की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाना एक फैशन सा बन गया है। मुझे इस बात में संदेह है कि जो लोग इस तरह का प्रश्न करतें हैं, वे ही स्वयं इस बात को लेकर आश्वस्त हैं कि गाँधी अप्रासंगिक एवं व्यर्थ हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या वे महसूस करतें हैं कि जीवन, सत्य और नैतिकता भी प्रासांगिक हैं? क्योंकि गाँधीवादी दर्शन की आधारशिलाएं वस्तुतः जीवन, सत्य और नैतिकता ही हैं। गाँधीजी ही नहीं प्लेटो, मैकियावली, मार्क्स सभी ने भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में अपने विचार लिखें। उनके विचारों को समझने के लिए पहले उस समय के सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों को समझना आवश्यक है, जिनका प्रभाव लेखकों पर पड़ा होगा। सामान्यतः ये ग्रंथ ऐसे नैतिक, धार्मिक एवं अन्य विचारों के संग्रह होतें हैं जो समय की सीमाओं से परे सार्वभौमिक विचार होतें हैं और जिनकी प्रासंगिकता हमेशा बनी रहती है। गाँधीजी ने अपने विचारों और सिद्धांतों को विशेष प्रणाली के रूप में विकसित करने के उद्देष्य से किसी ग्रंथ की रचना नहीं की। फिर भी उन्होंने कुछ निश्चित सिद्धांत अवश्य विकसित किए। इन सिद्धांतों को ही गाँधीवाद का नाम दे दिया गया है। वैसे तो गाँधीजी ने इतना लिखा है कि सम्पूर्ण वांगमय में उसके सौ खण्ड बने हैं।

महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता

जो परिवर्त्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें – महात्मा गाँधी

राष्ट्रपिता, बापू या मोहनदास करमचंद गाँधी भारत ही नहीं विश्व के चुनिंदें महान व्यक्ति के श्रेणी में आतें हैं। अहिंसा के मार्ग पर चलकर भारत को आजाद कराने वाले इस महात्मा ने इतिहास की दिशा बदल दी और नए इतिहास का सृजन किया। सत्य, शांति, अहिंसा, ईमानदारी

के प्रति अडिग रहने के कारण अपनी क्षीण काया व सादगी के बावजूद पूरी दुनिया के लिए एक 'रोल मॉडल' बन गए। जहाँ उनके व्यक्तित्व में सरलता थी, वहीं वे उच्च कोटि के जटिल व कुटील राजनीतिज्ञ व सामाजिक विचारक थे। गाँधीजी का चिंतन सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि यथार्थ के धरातल पर आधारित था। उनके लिए सिद्धांत और व्यवहार में कोई विरोधाभास नहीं था और ना ही वह सार्वजनिक व व्यक्तिगत जीवन में कोई विभेद करते थे। सत्य को अपनाकर उन्होनें षोषित व वंचितों के बंद जुबान के पीछे के दर्द को समझा, इसलिए वे जन–जन के हमदर्द बन गए। उन्होंने भारत की प्राचीन परंपरा, संस्कृति तथा मूल्यों को व्यवहारिक रुप प्रदान किया। गाँधीजी ने जिन मूल्यों व विचारों का प्रतिपादन किया, वे शाश्वत हैं।

गाँधीजी के विचार हर काम में विचारणीय है। उनके विचारों को अमल में लाकर प्रत्येक समाज या प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से अपनी जिंदगी को सरल बना सकता है। गाँधीजी के विचारों पर आज के समाज को सर्वाधिक विचार करने की आवश्यकता है और वह हर काल में प्रासांगिक ही रहेगी। गाँधीजी की मूल परिकल्पना में अहिंसा का स्थान सर्वोपरि है। उनका कहना था कि 'अहिंसा का पाठ सभी धर्मों में मौजूद है, लेकिन मैं बड़े चाव से यह मानता हूं कि संभवतः भारत ही ऐसा देश है जिसमें अहिंसा के आचरण को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया गया है। अनगिनत संतों ने लोकहित के लिए तपस्या करके अपने आप को होम कर दिया। लेकिन आज अहिंसा का वह आचरण लुप्त हो गया है। यह जरूरी होता जा रहा है कि क्रोध का जवाब प्रेम से और हिंसा का जवाब अहिंसा से देने के शाश्वत नियम को फिर से जीवित किया जाए, और यह चीज राजा जनक और रामचंद्र की भूमि से ज्यादा आसानी से कहां लागू हो सकती है। लेकिन गाँधीजी के अहिंसा के सिद्धांत एवं उसके प्रयोग की जितनी आवश्यकता उनके जीवित रहते हुए थी, आज इसकी आवश्यकता उससे ज्यादा महसूस की जा रही है। आज भी अमेरिका और इराक युद्ध में उलझे हुए हैं। भारत और पाकिस्तान की सीमा आज भी खून से लथपथ रहती है। आतंकवाद का डर हर आदमी के सीने में समाया हुआ है। ऐसी स्थिति में भी गाँधीजी के अहिंसा के सिद्धांत को अपनाने की पूरजोर कोशिश होती रही है। 1960 के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका में अश्वेतों के लिए समान अधिकार वाली मांग को लेकर हुए संघर्ष में मार्टिन लूथर किंग ने गाँधीवादी तरीके को ही अपनाया था। अपनी पुस्तक 'स्ट्राइड टुवर्ड्स फ्रीडम' में किंग ने अहिंसा की छः नीतियां प्रस्तूत की हैं, जो गाँधीजी के अहिंसापूर्ण नीतियों से मेल खाती हैं। 1996 में फिलीपीन्स का प्रजातांत्रिक आंदोलन पूरी तरह अहिंसापूर्ण था। जहां लोगों ने गाँधी की शांति सेना के तर्ज पर एक अपनी शांति सेना संगठित कर ली। म्यानमार का ऑग सन सू की द्वारा लोकतंत्र के पुनर्स्थापन के लिए चलाया जा रहा आंदोलन पूरी तरह अहिंसापूर्ण था। कम्बोडिया के पीस वॉक के द्वारा 1990 में सर्वसत्तावादी शासन के खिलाफ चलाया गया आंदोलन भी अहिंसापूर्ण था। गाँधीजी के अनुसार सत्य और अहिंसा का अनुसरण कायरता का मार्ग नहीं है। कायर पुरूष की अहिंसा वास्तविक अहिंसा है ही नहीं। अतः अहिंसा एवं सत्य के लिए निर्भीकता का होना अतिआवश्यक है। जब तक व्यक्ति निडर नहीं होगा तब तक वह अहिंसा एवं सत्य का अनुयायी हो ही नहीं सकता। गाँधीजी के अनुसार 'मैं मारने की अपेक्षा मरने का साहस रखता

हूं, लेकिन जिस आदमी के पास यह साहस नहीं है, मैं उसके लिए यही चाहुंगा कि आपत्ति से लज्जापूर्वक पीछे हटने के बदले वह मारने और मारे जाने की कला अपनाए'। गाँधीजी के अहिंसा के विचार को आज पूरी तरह नहीं माना जा सकता है। लेकिन इसे अप्रासांगिक भी कहना अनुचित होगा। एक पूरी तरह से हिंसामुक्त संसार संभव नहीं है पर हिंसा का कम से कम प्रयोग मानवों के लिए एक बेहतर जीवन को सुनिश्चित अवश्य करता है।

शिक्षा के बारे में गाँधीजी का दृष्टिकोण आज अधिक विचारणीय बन गया है। वे साक्षरों को सुसभ्य बनाना, इंद्रियों को बस में करना और नीति की नींव को मजबूत बनाने को शिक्षा का प्राथमिक धर्म मानतें थे। उनका मानना था कि शिक्षा बच्चों को ऐसी मिलनी चाहिए जो शिल्प केंद्रित हो। शैक्षणिक पद्धति ऐसी हो जो आर्थिक रूप से आत्म–निर्भर बनाए। बेरोजगारी अनेकों अपराध को जन्म देती है। गाँधीजी ने शिक्षा प्रणाली में क्रिया को प्रधानता दिया है। क्राफ्ट कोई भी हो – कृषि, कताई–बुनाई, गत्ते का कार्य, लकड़ी के कार्य आदि, ये सभी क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम में सम्मिलित होनी चाहिए जिससे मौजूदा सामाजिक असमानता को दूर करने में सहायता मिलेगी। शिक्षा के संबंध में गाँधीजी के विचार थे, 'अहिंसक प्रतिरोध सबसे बढ़िया शिक्षा है। वह बच्चों को मिलने वाली साधारण अक्षर–ज्ञान की शिक्षा के बाद नहीं, पहले होनी चाहिए। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि बच्चों को अक्षर ज्ञान भी मिलना चाहिए। लेकिन उन्हें यह भी जानना चाहिए कि आत्मा क्या है? सत्य और प्रेम क्या है? वह समझ सके कि जिंदगी के जंग में प्रेम से घृणा को, सत्य से असत्य को और कष्ट सहन से हिंसा को आसानी से जीता जा सकता है। इस सत्य की ताकत को पहचान कर ही उन्होंने टॉलस्टॉय फार्म और फिनिक्स आश्रम में बच्चों को इसी तरह की तालीम देने की भरसक कोशिश की थी'। गाँधीजी ग्रामीण भारत की नाड़ी पहचान गए थे। भारत गांवों में बसा है और किसी भी शिक्षा–पद्धति की सफलता यहां पर ग्रामीण शिक्षा के परिणामों पर ही निर्भर है। भारतीय समाज के लिए उन्होंने बेसिक शिक्षा को सर्वोतम शिक्षा कहा है। अक्टुबर 1937 ई. में नवीन शिक्षा प्रणाली पर विचार करने के लिए वर्धा में शिक्षाशास्त्रियों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस आंदोलन के सभापति गाँधीजी थे। इस सम्मेलन में उन्होंने विचार–विमर्श के बाद कुछ प्रस्ताव पारित किए। इस प्रस्ताव के अनुसार गाँधीजी ने बेसिक शिक्षा योजना के अन्तर्गत जो मूलभूत सिद्धांत प्रस्तावित किए वे हैं –

- प्रथम सात वर्ष तक देश के सभी बच्चों को अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा दी जाए।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
- उद्योग केंदित शिक्षा हो, जिससे छात्रों को स्वावलम्बित बनाया जा सके।

वैसे आजकल सरकार *क्षमता कौशल विकास* योजना के द्वारा युवाओं को प्रशिक्षित करके उन्हें स्वावलम्बित करने का प्रयत्न कर रही है। भारतीय जीवन के हर प्रसंग को गाँधीजी ने छुआ और उसे व्यावहारिक दृष्टि दी और इसलिए आज भी उनका जीवन दर्शन प्रासंगिक है। गाँधीजी ने अनेक रचनात्मक प्रवृतियां देश भर में चलाई थीं। उन्होंने अपनी पुस्तक रचनात्मक कार्यक्रम में 15 कार्यक्रमों का उल्लेख किया है, जो आज भी अपना महत्व बनाए हुए हैं। ये कार्यक्रम हैं–

साम्प्रदायिक एकता, अछूतो का उद्धार, मद्यनिषेध, खादी, ग्रामीण कुटीर उद्योग, ग्राम सफाई, नई तालीम, व्यस्क शिक्षा और साक्षरता, नारी का उद्धार, समग्र ग्राम सेवा, हिन्दुस्तानी का प्रचार, मातृभाषा के प्रति प्रेम, आर्थिक समानता के लिए कार्य, आदिवासियों की सेवा, विद्यार्थी, किसान और मजदूरों का संगठन।

स्वदेशी व खादी को जन–जन अपनाए, इसके लिए गाँधीजी ने अथक प्रयास किया। हस्तकला एवं सूत कातने का प्रचार, सभी को रोजगार मुहैया कराने का उनका एक तरीका था। इसका विचार प्रतीकात्मक था। गाँधीजी मशीनों के प्रयोग के प्रबल विरोधी थे। उन्हें लगता था कि वह मानव–श्रम का स्थान ले लेगी। आज कल लोग स्वदेशी व खादी के प्रति फिर से जागरूक होने लगे हैं। खादी पहनना भी एक फैशन बनता जा रहा है। गाँधीजी के विचारों को आत्मसात करके *प. हीरालाल शास्त्री* ने वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना 1934 में राजस्थान के छोटे से गांव वनस्थली में किया था। आज भी इस विद्यापीठ में गाँधीजी के विचारों को अमल में लाया जा रहा है। विद्यापीठ की करीब 15000 छात्राएं, शिक्षक एवं कर्मचारीगण आदतन खादी ही पहनते हैं। यहां के अनौपचारिक शिक्षा केंद्र में हजारों ग्रामीण महिलाओं को खादी बनाने का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। गाँधी जी के विचारों के तर्ज पर यहां की छात्राओं को व्यवहारिक, नैतिक, शारीरिक, बौद्धिक व कला विषयक शिक्षा पंचमुखी शिक्षा के रूप में दी जा रही है।

स्वच्छता को लेकर गाँधी जी के विचार

1) महात्मा गाँधी ने कहा था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है।

2) यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता।

3) बेहतर साफ–सफाई से ही भारत के गाँवों को आदर्श बनाया जा सकता है।

4) शौचालय को अपने ड्राइंग रूम की तरह साफ रखना जरूरी है।

5) नदियों को साफ रखकर हम अपनी सभ्यता को जिन्दा रख सकते हैं।

6) अपने अंदर की स्वच्छता पहली चीज़ है जिसे पढ़ाया जाना चाहिए। बाकी बातें इसके बाद होनी चाहिए।

7) हर किसी एक को अपना कूड़ा खुद साफ करना चाहिए।

8) मैं किसी को गंदे पैर के साथ अपने मन से नहीं गुजरने दूँगा।

9) अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के समान है जो सतह को चमकदार और साफ कर देता है। *(न्यूज स्टेट ब्यूरो, 2 अक्टूबर, 2018)*

आंतरिक स्वच्छता की महत्ता को बापू ने 10 दिसंबर, 1925 के यंग इंडिया के अंक में कुछ इस प्रकार रेखांकित किया था "आंतरिक स्वच्छता पहली वस्तु है, जिसे पढ़ाया जाना चाहिए, अन्य बातें प्रथम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पाठ सम्पन्न होने के बाद लागू की जानी चाहिए।" वह मानव प्रगति के लिए आंतरिक और बाहरी स्वच्छता को आवश्यक मानते थे। उन्होंने स्वच्छता को आत्मविकास एवं राष्ट्रविकास का सबसे महत्वपूर्ण अवयव माना और इसे इस प्रकार स्पष्ट किया – "एक पवित्र

आत्मा के लिए एक स्वच्छ शरीर में रहना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि किसी स्थान, शहर, राज्य और देश के लिए स्वच्छ रहना जरूरी होता है, ताकि इसमें रहने वाले लोग स्वच्छ और ईमानदार हों।" स्वच्छता का उनका दर्शन अत्यंत व्यापक था। इस व्यापकता को उन्होंने यह कह कर व्यक्त किया कि यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है, तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है। और यदि वह स्वस्थ नहीं है, तो वह स्वस्थ मनोदशा के साथ नहीं रह पाएगा। स्वस्थ मनोदशा से ही स्वस्थ चरित्र का विकास होगा। दुनिया में हर तरफ बढ़ती हिंसा और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से पर्यावरण और मानवीय जीवन पर आ रहे संकट ने दुनिया भर के चिंतकों का ध्यान गाँधीजी के हिन्द स्वराज की तरफ खींचा है, क्योंकि यह पुस्तक 'सतत विकास' की संकल्पना को सर्वाधिक प्रामाणिक रूप में रेखांकित करती है। मानवता की इन चिंताओं से जुड़े होने के कारण हिन्द स्वराज एक ग्लोबल टेक्सट बन गया है।

निष्कर्ष

गाँधीजी के विचारों को कुछ पन्नों में नहीं समेटा जा सकता है। उनके सिद्धांत, विचार और जीवन दर्शन आज भी उतने ही प्रासंगिक है, जितना कल था और आने वाले कल में भी उतने ही प्रासंगिक रहेंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ के सभा कक्ष से लेकर 122 देशों की राजधानियों ने महात्मा गाँधी को जिंदा रखा है। कहीं उनके नाम पर सड़क बनी, तो कहीं शोध संस्थान, तो कहीं उनके नाम की प्रतिमा लगी है। विश्व की देषों के बीच बढ़ती आपसी रंजिसें, यांत्रिक तंत्रों में उलझता जीवन, दिनोंदिन मूल्यों का होता पतन, युवाओं में बढ़ता रोष व अवसाद, महिलाओं के प्रति विकृत होते नजरिए का दुष्परिणाम जैसे–जैसे सामनें आ रहें हैं, वैसे–वैसे देश और दुनिया के तमाम विचारक विकल्प की तलाश में गाँधीजी के पास लौट रहें हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1) राकेश शर्मा निशीथ, *महात्मा गाँधी की विचारधारा आज भी प्रासंगिक,* 2016, पृ0 **273–274**
2) कुसुम लता चड्ढा, *गाँधी वाचन,* 2009, पृ0 **147**
3) राकेश शर्मा निषीथ, *महात्मा गाँधी की विचारधारा आज भी प्रासंगिक,* 2016, पृ0 **278–279**
4) हरिदास आर एस सुदर्शन संपादित, *गाँधी–विचार,* 2011, पृ0 **36**
5) *स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स ऑफ महात्मा गाँधी,* चौथा संस्करण, पृ0–**189**
6) हरिदास आर एस सुदर्षन ;संपादितद्ध, *गाँधी–विचार,* 2011, पृ0 **60–61**
7) मनोज सिन्हा, ;संपादितद्ध, *गाँधी–अध्ययन,* 2013, पृ0 **198**
8) शर्मा, विरेन्द्र प्रकाश 'भारत में समाज, रिपोर्ट ऑफ वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2015, पृ. **330**
9) बेन्नी जॉर्ज, निर्मल ग्राम पुरस्कार : ग्रामीण भारत में प्रोत्साहन योजना में एक अनूठी प्रयोग ग्रामीण अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका (आईजेआरएस) वॉल्यूम 16 नंबर, पृ0 **36**, 1 अप्रैल 2009

10) मृदुला सिन्हा एव ंसिन्हा, आर. के., स्वच्छ भारत ए क्लीन इंडिया : प्रभात प्रकाषन, पृ0 **24**,6 मई 2016.

11) ''स्वच्छ भारत चेकलिस्ट'' किरण बेदी व पवन चौधरी विस्डम विलेज पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, पृ0 **18**, 1 जनवरी 2015

12) जोशी एस. सी., स्वच्छ भारत मिशन एन एसएसमेंट : 1 जनवरी 2017, पृ0 **102**

13) यंग इण्डिया, 22 जनवरी, 1930

14) कलैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी, खण्ड– 66, पृ0 **426**

15) हरिजन, 12 अप्रैल, 1942

16) वर्मा, श्रीराम, भारतीय राजनीतिक विचारक : कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर पृ0 **430,** 1998.

17) चतुर्वेदी, मधुकर श्याम, प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक : कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर, पृ. सं. **301**

18) नगर, पुरूषोत्तम 1999 आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ0 **430**

19) स्वच्छ भारत अभियान, एम. के. सिंह, सोलर बुक्स, 1 जनवरी 2017, पृ0 **78**.

20) सिंह पंकज के., स्वच्छ भारत समृद्ध भारत, डायमंड बुक्स, 1 अक्टूबर 2015

21) भारत में स्वच्छ अभियान – कार्यनीति और क्रियान्वयन, नेशनल बुक ट्रस्ट, 1 जनवरी 2016